फरीदाबाद मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 66 | दिसम्बर 1993 | 1/-

इस अंक में

- हरियाणा कर्मचारी आन्दोलन
- शक्ति-भक्ति और बलात्कार
- बारानगर जूट मिल
- नर्सों की सफलता
- पुर्तगाल हड़ताल

एस्कोर्ट्स के मजदूरों से थोड़ी गप-शप

गुनगुनी धूप है पर फैक्ट्री के अन्दर पार्क में लेटने की बजाय भीड़ गेटों से निकल रही है। रेहड़ी-ठेलों की ओर ध्यान दिये बिना लोग एक जगह जमा हो रहे हैं। सब खड़े हैं। माहौल में एक बेचैनी तैरती नजर आती है।

पेड़ की शाख से बन्धे माइक से जिन्दाबाद गूँज रहे हैं। प्रत्युत्तर में भीड़ मन्द स्वर में अपनी उपस्थिति ज़ाहिर कर रही है। मैनेजमेंट के रिपोर्टर कापियों पर पैन्सिल घिस रहे हैं। "कुछ करें तो नुकसान, कुछ नहीं करें तो नुकसान" के उद्घोष ने माहौल को और बोझिल बना दिया।

श्री विदुषक ने आधी बाँह की हरी-नीली स्वेटर पहने ठीक से डील-डौल वाले एक आदमी से नरमी से पूछा, "भाई साहब, सब लोग बहुत गम्भीर दीख रहे हैं, क्या बात है?" गंजिया रहे उस व्यक्ति ने कहा, "एग्रीमेंट तो लटकी ही थी, बोनस का मामला भी लटक गया है।" भली-चँगी नामी-गिरामी एस्कोर्ट्स के वरकर से यह सुन कर विदूषक की जिज्ञासा जागी। "भाई, यह कैसे हो गया?" "कम्पनी की हालत खराब है और कुछ ड्रामेबाजी भी चल रही है", कहते हुये वह गेट के अन्दर चला गया।

विदूषक : बनती, बिगड़ती, उलटती सरकार
बदलते हैं नेता, मचलती है नीति
दुनियां इक मण्डी, इसकी यही रीति

चलाना हो देश, या चले कारखाना
कटती पगार, बढ़ते काम के घन्टे
संकट का सिलसिला, घिसा-पिटा पुराना।।

1983 : एस्कोर्ट्स पर कब्जे के लिये नन्दा और स्वराज पाल के बीच छीना-झपटी के दौरान तीन साला एग्रीमेंट का वक्त आया था। मैनेजमेंट की बीस परसैन्ट वर्क लोड बढाने की मांग ठुकरा कर हुये समझौते पर खूब तालियां बजी थी। ले-दे कर आखिरकार नन्दा मैनेजमेंट एस्कोर्ट्स पर कब्जा बनाये रखने में सफल हो गई। सफलता के फौरन बाद मैनेजमेंट ने एस्कोर्ट्स मजदूरों से पूरी एग्रीमेंट लागू करने को कहा। बिना वर्क लोड बढाये पैसे बढवाने वाले शानदार समझौते में I.E. NORMS लागू करना तय किया गया था। और I.E. NORMS का मतलब था एस्कोर्ट्स के मजदूरों पर तीस परसैंट वर्क लोड बढाना।

मार्च 1987 : नई तीन साला एग्रीमेंट। खूब तालियां बजी। एक इन्सैन्टिव स्कीम। महीने-भर में ही 50 से 80 परसैन्ट वर्क लोड बढ़ने का पता चला।

मार्च 1989 : मिनी एग्रीमेंट। पन्द्रह परसैन्ट वर्क लोड बढाया।

अप्रैल 1990 : सब प्लान्टों में एक महीने काम बन्द के बाद तीन साला एग्रीमेंट। वर्क लोड में 50 परसैन्ट वृद्धि। ओवर टाइम की जगह ओवर स्टे वाले महीन शब्दजाल के जरिये सिंगल रेट से पेमेन्ट। 775 करोड़ की जगह 1200 करोड़ रुपये सालाना का प्रोडक्शन टारगेट।

एग्रीमेंटों के जरिये एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट वेतन पर कम से कम खर्च करते हुये प्रोडक्शन को लगातार बढाती रही है। 1986 का 382 करोड़ रुपये का प्रोडक्शन तीन साला एग्रीमेंट द्वारा 1987 में 482 करोड़ का और 1988 में 600 करोड़ रुपये का किया गया। 1990 में हुई तीन साला एग्रीमेंट ने इसे 1991 के लिये 1200 करोड़ रुपये की टारगेट दी। (सामग्री हमने "मजदूर आन्दोलन की एक झलक" पुस्तक से ली है।)

विदूषक : एग्रीमेंट के काले हरफ, तेरे चारों तरफ
तुझे लपेटे हुये
पर वरकर तू मुड़कर देखता नहीं है
एग्रीमेंट के पन्ने पढ़ता नहीं है

आंखों पर पट्टी बांध कर
लीडर के हाथ में अपनी लगाम थमा कर
साल दर साल
काम करता है तू
पिसता है तू
घिसता है तू

अब तो आँखें खोल ले
सस्ती खबरों की जगह, एग्रीमेंट के सस्ते कागज पर
कम से कम एक नजर डाल ले

इसकी कागज तेरी मेहनत के चीथड़ों से बनी है
इसकी स्याही में तेरा पसीना है
इसके अलफाज
मैनेजमेंट की जरूरत, लीडरी की दुकानों की नसीहत
और तेरे बेवकूफ फसानो की हकीकत की
मिली-जुली, शत-प्रतिशत जायज पैदाइश है

अब तू ही समझ ले तुझे करना क्या है।।

1983 : फोर्ड प्लान्ट के हँगामें। जलूस निकाले, चन्दे दिये, कुटे-पिटे, जेल गये, गेट बन्द हुये – सब नन्दा-स्वराज पाल के झगड़े के भेंट चढे।

1986 : I.E. NORMS के नाम पर 30 परसैन्ट वर्क लोड बढाने का तीखा विरोध। 50 रुपये की चाशनी को मजदूरों ने ठुकराया। धमकियों को झेला। मैनेजमेंट ने फूट डाल कर, नारियल फोड़ कर, प्रसाद बांट कर वर्क लोड थोपा।

1987 : सब प्लान्टों के मेन्टेनैन्स वरकरों ने एग्रीमेंट के खिलाफ आपस में तालमेल कायम किया। थर्ड प्लान्ट की कुछ डिपार्टमेंटों के मजदूरों ने चक्का जाम किया और 28 मार्च को फोर्ड प्लान्ट में तो एग्रीमेंट के खिलाफ अचानक मजूदरों ने पूरा चक्का जाम किया।

1989 : मिनी एग्रीमेंट द्वारा 15 परसैन्ट वर्क लोड बढाने का विशेष विरोध नहीं। एस्कोर्ट्स एन्सीलरी के वरकरों द्वारा एग्रीमेंट के खिलाफ टूल डाउन हड़ताल। मैनेजमेंट ने तालाबन्दी करके मजदूरों के विरोध को कुचला।

1990 : एग्रीमेंट के खिलाफ हाथ उठाये। प्रोडक्शन बढाने से इनकार। मैनेजमेंट ने कुछ ले-दे कर प्रोडक्शन बढ़वाया।

(बाकी पेज चार पर)

हरियाणा राज्य कर्मचारी आन्दोलन

शेर सिंह

23 और 24 नवम्बर को हरियाणा सरकार के 1199 कर्मचारियों ने चन्डीगढ़ में गिरफ्तारी दी। कर्मचारियों द्वारा चंडीगढ में गिरफ्तारी देने के सिलसिले की यह शुरुआत थी। हर रोज गिरफ्तारी देने वाले जत्थों से जेल में बढ़ती भीड़ से छुटकारा पाने के लिये चंडीगढ़ प्रशासन ने पहली दिसम्बर को जेल के अन्दर विशेष अदालत लगाई। 23-24 नवम्बर को गिरफ्तार किये गये 1199 कर्मचारियों को विशेष अदालत ने रिहा कर दिया पर इन कर्मचारियों ने जेल से बाहर निकलने से इनकार कर दिया क्योंकि जेल के दरवाजे पर कई गाड़ियाँ लिये भारी तादाद में हरियाणा पुलिस खड़ी थी। रिहा किये जा रहे कर्मचारियों में से कई को नये सिरे से गिरफ्तार करने के लिये आई हरियाणा पुलिस ने ऐसे कर्मचारियों की सूची भी जेल अधिकारियों को दी थी। हरियाणा सरकार के कर्मचारियों ने चंडीगढ प्रशासन को यह स्पष्ट कर दिया कि यदि उन्हें जबरन जेल से बाहर निकाला गया और हरियाणा पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करने के प्रयत्न किये तो वे भी पुलिस से दो-दो हाथ करेंगे। 1199 कर्मचारियों के जुझारू रूख को देख कर चन्डीगढ़ प्रशासन ने अपने सिर से बला टालने के लिये किसी भी कर्मचारी को हरियाणा पुलिस के हवाले करने से मना कर दिया और हरियाणा पुलिस व उसके वाहनों को वहां से हटवाया। कर्मचारियों की बड़ी संख्या तथा उनके सामुहिक कदम ने चंडीगढ प्रशासन और हरियाणा पुलिस को पीछे हटने को मजबूर किया। यूँ 23 नवम्बर से वर्दी में व सादे कपड़ों में हरियाणा पुलिसवाले चंडीगढ बस अड्डे से जिसे चाहते हैं सरेआम उठा कर अज्ञात स्थान पर ले जाते हैं और केन्द्रशासित प्रदेश चंडीगढ की पुलिस चुपचाप देखती रहती है। कहते हैं कि हरियाणा पुलिस की यह कार्रवाई असंवैधानिक है।

वैसे, संवैधानिक है संविधान की धारा 311(2-बी) जिसके अनुसार बिना किसी भी प्रकार की सुनवाई के केन्द्र और राज्यों के कर्मचारियों को बर्खास्त किया जा सकता है। बराये नाम की भी सुनवाई किये बिना कर्मचारियों को बर्खास्त करने की संवैधानिक शक्ति का हरियाणा सरकार बेझिझक इस्तेमाल कर रही है। तीन दिसम्बर तक ही संविधान की धारा 311(2-बी) के तहत हरियाणा सरकार ने 475 कर्मचारियों को नौकरी से डिसमिस कर दिया था।

अनावश्यक सेवाओं का जहां बोलबाला हो वहां आवश्यक सेवा बनाये रखने के नाम वाले कानून जरूरी हो जाते हैं। भारत सरकार ने एस्मा नाम से ऐसा कानून बना रखा है। एस्मा कानून में सख्त सजा का प्रावधान है। हरियाणा सरकार इस कानून का भी खुल कर इस्तेमाल कर रही है। एस्मा के तहत तीन दिसम्बर तक ही 472 कर्मचारी हरियाणा की जेलों में बन्द किये जा चुके थे तथा सैंकड़ों अन्य कर्मचारियों, जिन पर एस्मा के तहत केस बनाये जा चुके हैं, उन्हें हरियाणा पुलिस ढूंढ रही थी। इस ढूंढने के दौरान हरियाणा पुलिस किसी के 12 वर्षीय बेटे को तो किसी के 60 वर्षीय बाप को उठा ले जाती है और किसी के 16 वर्षीय बेटे की धुनाई कर रही है। देर रात हरियाणा पुलिस प्राइवेट प्रेक्टिस कर रहे किसी के डाक्टर भाई को और साथ रह कर पढ़ रहे किसी के 15 वर्षीय भाई को उठा ले जाती है। किसी की 70 वर्षीय मां को हरियाणा पुलिस धमका रही है तो किसी...

चन्डी और चांदी के गढ़ में हरियाणा सरकार के कर्मचारियों को दस्तक देने से रोकने के लिये हरियाणा-भर में खुफिया विभाग, पुलिस और पुलिस ले कर नागरिक प्रशासन बस अड्डों-रेलवे स्टेशनों पर डन्डे लहरा रहे हैं। चन्डीगढ से भी हरियाणा पुलिस लोगों को उठा कर ले जाती है। दिल्ली बस अड्डे पर हरियाणा पुलिस और साहब लोग चन्डीगढ जा रही बसों की तलाशियाँ ले रहे हैं। बस या रेल से किसी को खींच कर नीचे उतारना, टिकट फाड़ देना और लात-घूँसे-डन्डे बरसाना हरियाणा पुलिस का सामान्य तरीका है। यही तरीका हरियाणा सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ इस्तेमाल किया जा रहा है। आम लोगों को इस दौरान पुलिस द्वारा दिये जाते इस प्रसाद में बोनस भी जुड़ गया है। कहते हैं कि यह सब असंवैधानिक है, गैर-कानूनी है... पता नहीं। पर हां, चंडी और चांदी के संविधान-कानून तांडव में सहायता के लिये होते हैं। जहां कहीं संविधान-कानून तांडव में आड़े आते हैं वहां चंडी-चांदी की जब तक चलती है तब तक संविधान-एंविधान का कोई मतलब नहीं होता। चंडी-चांदी गिरोहों के तांडव के खिलाफ वरकरों के पास सामुहिक कदम ही एकमात्र कारगर औजार है। चन्दीगढ़ में गिरफ्तारियाँ देने के साथ-साथ जिलों-तहसीलों पर प्रदर्शनों का सिलसिला रहता तो हरियाणा पुलिस की लगाम खिंची रहती।

हरियाणा सरकार के मुख्य मन्त्री और मुख्य सचिव कहते हैं कि कर्मचारियों की डिमान्डें मानने से विकास रूक जायेगा। उनकी यह बात सही है। अनावश्यक विकास पर तो अवश्य लगाम लग जायेगी। ब्लैक कैट कमान्डो कम करने पड़ेंगे। कारों के काफिले और उनकी साइज कम हो जायेंगी। भोजों की संख्या और उनकी रौनक में कटौती करनी पड़ेगी। देश-विदेश की यात्रा और फाइव स्टार होटलों के बिल कम करने पड़ेंगे। वास्तव में विकास रूक जायेगा। पर हाँ, सांप भी मर जाये और लाठी भी नहीं टूटे के लिये एक रास्ता अभी है- टैक्स बढा दो, बिजली के रेट-बस भाड़े-स्कूल की फीस-मार्केट फीस-अस्पताल में पर्ची बनाने के लिये पैसे.... और फिर, आम लोगों का असन्तोष बढेगा तो आतंकवाद की फसल उगेगी जिसे काटने के लिये केन्द्र सरकार से पंजाब को जैसे मिल रहे हैं वैसे500 करोड़ रुपये सालाना मिलेंगे... उल्टा-पुल्टा अगड़म-बम ! डर लगता है धीले कुड़तें-पजामों से, फिर चाहे वो मुख्यमन्त्री ने पहने हों चाहे कर्मचारी नेता ने।

पंजाब सरकार के कर्मचारियों के समान वेतन व भत्ते और वार्षिक बोनस की डिमान्डें हासिल करने के लिये हरियाणा सरकार के कर्मचारियों द्वारा गिरफ्तारियाँ देने के दौरान दस दिन में जो देखने में आया है उसकी एक झलक ही यहां आई है। 7 से 9 दिसम्बर वाली प्रस्तावित हड़ताल अगर रस्मी-फर्जी की बजाय असल हड़ताल हुई तो हरियाणा सरकार के कर्मचारी अपने हितों के लिये जूझने की दिशा में बढेंगे।

पुश्तैनी अथवा नया पार्ट टाइम काम, ओवर टाइम, इधर-उधर हाथ मारने की फिराक में परेशान कर्मचारियों को अपने कम वेतन की हकीकत को कुछ ध्यान से देखने की जरूरत है- विशेषकर तब जबकि 25 हजार रुपये महीना हासिल करने वाले इंडियन एयरलाइन्स पायलट 50 हजार रुपये महीना के लिये हड़तालें कर रहे हों।

पुर्तगाल

लिसनेव यूरोप में सबसे बड़ी बन्दरगाह प्रबन्धक और जहाज मरम्मत करने वाली कम्पनी है। 1993 में इस कम्पनी पर कर्ज के एक हजार करोड़ रुपये तक बढ़ जाने की आशंका है।

पुर्तगाल में टागस नदी के दोनों तटों पर स्थित लिसनेव कम्पनी प्रबन्धन हर साल 120 से 150 जहाजों का संचालन करती है। इन जहाजों में अधिकतर भीमकाय तेल टैंकर होते हैं।

नवम्बर माह की तनखा 30 नवम्बर को जब नहीं मिली तब पुर्तगाल में लिसनेव कम्पनी के 4000 से अधिक मजदूरों ने हड़ताल आरम्भ कर दी। इससे कई सूपर ऑयल टैंकर और एक जहाज गोदी में फँस कर खड़े हो गये। पुर्तगाल सरकार और लिसनेव कम्पनी के बीच इमरजैन्सी मीटिंग हुई। पुर्तगाल के केन्दिय बैंक ने मजदूरों को नवम्बर माह का वेतन देने की गारन्टी दी। मजदूरों द्वारा हालात पर विचार करने की सूचना ही अखबारों में थी।

फिल्म इन्डस्ट्री लॉक आउट

मैनेजमेंटों की एसोसियेशन, फिल्म मेकर्स कम्बाइन ने 5 नवम्बर को बम्बई में तालाबन्दी घोषित कर दी। यह कदम बम्बई फिल्म उद्योग में डेली वेजेज पर काम कर रहे 20 हजार वरकरों की डिमान्डों को रफा-दफा करने के लिये उठाया गया।

बारानगर जूट मजदूर

खींचा-तान के चलते, मजदूरों को दबाने के लिये बारानगर जूट मिल मैनेजमेंट ने 15 अक्टूबर को फैक्ट्री में तालाबन्दी कर दी। 16 अक्टूबर को सुबह फैक्ट्री के 4000 मजदूरों और उनके समर्थकों ने तालाबन्दी के खिलाफ दक्षिणेश्वर रेलवे स्टेशन पर रेल लाइन तथा निकट से गुजरती सड़कों को जाम कर दिया। 17 अक्टूबर को लॉक आउट उठा ली गई, फैक्ट्री खोल दी गई।

नर्सों की सफलता

दिल्ली में गुरू तेग बहादुर अस्पताल में भारी वर्क लोड, रिहाइश की समस्या और पदोन्नति के अभाव के खिलाफ नर्सों ने 16 नवम्बर से हर रोज दो घन्टे की हड़ताल शुरू की। दस दिन बाद, 26 नवम्बर को मैनेजमेंट कुछ झुकी। 740 नर्सों के रिक्त पद भरने के लिये तीन चरणों में नई भर्ती की जायेगी। 30 नवम्बर तक नई नर्सों की भर्ती के साथ-साथ पदोन्नति की प्रक्रिया भी पूरी की जायेगी। नर्सों की रिहाइश की समस्या हल करने के लिए मैनेजमेंट तत्काल कदम उठायेगी।

पांच-छह अरब लोगों के हाथों में अर्थपूर्ण भविष्य की कुंजी है – पांच-छह अरब के सचेत सामुहिक हाथों में। मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये आवश्यक सचेत सामुहिक एकता में योगदान के उद्देश्य से हम यह अखबार प्रकाशित करते हैं।

शक्ति भक्ति, शक्ति प्रदर्शन और बलात्कार

दीर्घकाल से शक्ति-भक्ति और शक्ति-प्रदर्शन समाज की धुरी के तौर पर काम कर रहे हैं। महानता और सफलता के इन्होंने मापदण्ड निर्धारित किये हैं।

वह जिसने विशाल क्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित किया
जिसकी शान को अमरत्व प्रदान करने में हजारों खपते गये
दूर-दूर से चुन-चुन कर लाई सुन्दरियों ने जिसके महल की शोभा बढाई
शास्त्रार्थ के दांव-पेच में सर्वोच्च वो महापण्डित
भाट-चारणों ने गाये जिसके गीत
वह आदर्श है, अनुकरणीय है, पुरूषोत्तम है।।

ताज-ओ-तख्त से जुड़ी रक्तरंजित तलवारों के साये में मानव जीवन को नये अर्थ-नई दिशा-नये आयाम देने के लिये पीढ़ी-दर-पीढ़ी कुछ लोगों ने शक्ति-प्रदर्शन को अंगूठा दिखाया, स्वयं शक्ति के आदर्श को चुनौती दी।

ना कोई ऊंचा, ना कोई नीचा, ना कोई ज्ञानी-पण्डित
अर्थहीन हैं अमर, नहीं कोई तुच्छ जगत में
उत्तर-दखिण, पूरब-पच्छिम दिल की धक-धक एक
नर हो, नारी हो, ढूंढे सब जीवन का अर्थ
इससे बेहतर और अर्थ क्या
साथ पकायें, मिलकर खायें
कुदरत से रहे मेल।।
यह आदर्श है, यह अनुकरणीय है, यह मानवीय है।

★ ★ ★

शक्ति-पूजा और शक्ति-प्रदर्शन की आज हमारे जीवन में भूमिका :

● किताबों से भरे झोले, प्रेस की हुई वर्दी, गम्भीर चेहरे लिये कतारों में छोटे बच्चे।

हम छोटे-छोटे बच्चे हैं
तेरी महिमा तो क्या जानें
मम्मी कहती : फस्ट आना, सबको दिखाना
पापा कहते : मुन्ना हमारा बड़ा नाम करेगा
टीचर कहती ट्यूशन का इन्तजाम करेगा
जो खेलेगा-कूदेगा बर्बाद होयेगा।।

● 12वीं कक्षा के परीक्षा हाल में डेस्कों पर झुके छात्र-छात्राओं के तनावयुक्त चेहरे।

महिमा कुछ-कुछ समझी है
जगह कम हैं, भीड़ बहुत है
कुहनी मार-टंगड़ी मार
औरों से आगे निकलना है।।

● लन्च में लेटे, अध-लेटे, मूंगफली चबाते, ताश खेलते हुजूम।

तेरी महिमा अपरम्पार
मन मार कर जुटे हुये हैं
फिर भी पार नहीं पड़ती
जोड़-तोड़ और तिकड़मबाजी
पद की सीढ़ी चढ़ने को
कोई मारता धक्का, कोई खींचता टांग
तुच्छ-तुच्छ-तुच्छ... क्यों बनते जा रहे तुच्छ ??

★ ★ ★

तुच्छता, पुरूषप्रधानता के दौर में तुच्छता और शक्ति-आदर्श, शक्ति-प्रदर्शन की हवस की हमारे जीवन में भूमिका :

● क्लान्त, तुच्छ, गौण पौरुष। अपनी मान्द में प्रवेश। पत्नी ड्यूटी से नहीं लौटी है। गुस्सा। शक। पत्नी : ओवरटाइम था। शक। चाय पी ली? नहीं। कम से कम चाय तो अपने आप बना कर पी लिया करो ! जबान मत लड़ाओ। यह कोई बात करने का तरीका है? यहां भी पौरुषता पर हमला ! विस्फोट। नरसिंह का रौद्र रूप। लात, घूँसे और बलात्कार।

पीढियों से घरों में हो रहे अदृश्य बलात्कारों को स्त्रियां अब जा कर चुनौती देने लगी हैं।

● सन्डे। कम्पलसरी ओवरटाइम। कुछ डिपार्टमेंटों में ही काम। लन्च। फूहड़ मजाक। छेड़-छाड़। गाली। पौरुष को चुनौती? चौतरफा हँसी। गुस्सा। शारिरिक बल का प्रदर्शन। हाथा-पाई... बलात्कार।

खेत-खलिहान में, जंगल-खदान में परम्परा बन चुके अदृश्य बलात्कारों को सामाजिक क्षेत्र में पढी-लिखी महिलाओं की उल्लेखनीय संख्या हो जाने के बाद, अब चुनौतियों का मुकाबला करना पड़ रहा है।

● सिनेमा हाल में पर्दे पर सीन-दर-सीन नारी के अंग-अंग का मसला जाना शक्ति की, पौरुष की पहचान। दर्शकों का अभिनेता से एकाकार हो कर अपनी शक्तिहीनता, अपनी तुच्छता को भूलने का प्रयास। मनोरंजन।

● झगड़े-दंगे फसाद-युद्ध। मां-बहन की गाली। नीचा दिखाने के लिये औरतों पर हमले। हजारों बलात्कार। परिवारों, गिरोहों, समूहों, देशों के झगड़ों में स्त्रियों के शरीर भी युद्ध-क्षेत्र बन जाते हैं। शक्ति-प्रदर्शन के चन्द नमूने :

राजस्थान में कुम्हारों और गूजरों के झगड़े में भंवरी बाई से बलात्कार। उत्तर प्रदेश में त्यागी गिरोह पर रौब जमाने के लिये पुलिस द्वारा माया त्यागी को नँगी करके बाजार में घुमाना। गुजरात के सूरत शहर में हिन्दू-मस्लिम दंगों के दौरान औरतों से बलात्कार, उसकी वीडियो फिल्म। किस महान योद्धा, किस चक्रवर्ती सम्राट के अश्वमेध घोड़े स्त्रियों को उठा कर लाये बिना लौटे? हिटलर की फौजों ने रूस में जहां-जहां उनके पांव पड़े, बलात्कार का तांडव किया। पासा पलट कर जर्मनी में दाखिल हुई रूस की लाल फौज ने बीस लाख औरतों के साथ बलात्कार किया। जापान सरकार ने फौजियों के लिये द्वीपों पर स्त्रियों को कैद करके रखा था। आज बोस्निया में विरोधी गुटों ने बलात्कार के लिये कैम्पों में औरतों को बन्दी बना कर रखा हुआ है।

★ ★ ★

आम आदमी वर्दी पहन कर, बन्दूक थाम कर अपनी तुच्छता-शक्तिहीनता-भय से पार पाने के लिये, अपने अस्तित्व का बोध कराने के लिये, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये, जहां कहीं उसका बस चलता है वहां बलात्कार कर सकता है, अक्सर करता है।

शक्ति-आदर्श और शक्ति-प्रदर्शन के कांटेदार चश्मे अपने पुरुषप्रधानता वाले रूप में नारी के व्यक्तित्व को ओझल कर देते हैं।

हीर-रांझा के लेखक बुल्ले शाह का दोहा –

भट्ठ नमाजाँ , चिक्कड़ रोजे , कलमें फिर गई स्याही।
बुल्ले शाह, शौह अन्दरों मिलया, भुल्ली फिरे लोकाई।।

(नमाज को ठोकर मारो, कीचड़ फेंको रोजों पर, काला पोतो कलमा पर। कहे बुल्ले शाह, मोहब्बत दिल के अन्दर मिली, ढूँढें लोग इधर-उधर।।)

एस्कोर्ट्स..... (पेज एक का शेष)

1992 : 8.33 परसैन्ट बोनस लेने से मजदूरों ने इनकार किया। मैनेजमेंट को 11.67 परसैन्ट एक्स ग्रेसिया देना पड़ा।

1993 : 8.33 परसैन्ट बोनस लेने से इनकार। विरोध में काले बिल्ले।

आज माजरा क्या है?

जटिल बुद्धि का सहज तर्क : उत्पादन बढाइये, अपना भला कीजिये !

इन्सैन्टिव की दौड़ ने गेडोर, मैटल बॉक्स, केल्विनेटर, आयशर ट्रैक्टर्स में प्रोडक्शन तो अवश्य बढाया पर छंटनी और तालाबन्दी के घेरे ने मजदूरों को जकड़ लिया। इन्सैन्टिव के चक्कर में एस्कोर्ट्स के मजदूरों ने 1988 में 10 महीनों में साल-भर का प्रोडक्शन दे कर 25 परसैन्ट वरकर एक्स्ट्रा होने की बात सिद्ध कर दी थी। मैनेजमेंट ने छंटनी करने की बजाय 1990 की एग्रीमेंट में 50 परसैन्ट वर्क लोड बढा कर इस स्थिति का फायदा उठाया था। इस बीच मण्डी की दिक्कतों आदि से हालात ऐसी बनती गई हैं कि अब ले आफ, वेतन जाम, कम लोगों से ज्यादा काम, छँटनी, लॉक आउट करना मैनेजमेंट के एजेन्डा पर उभर कर आ रहे हैं। 3300 परमानेन्ट मजदूरों, 600 सुपरवाइजरों-स्टाफ के लोगों, 240 मैनेजरों की छंटनी एस्कोर्ट्स में एजेन्डा पर आ गई है। विगत की ही तरह इस समय भी मैनेजमेंट अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिये तीन साला एग्रीमेंट को जरिया बना सकती है।

विदूषक : चिन्ता में क्यों डूबे हो? आओ थोड़ी बातचीत करते हैं। इससे मन कुछ हलका होगा और हो सकता है कि कोई रास्ता ही निकल आये।

अपने नियन्त्रण को पुख्ता करने के लिये मैनेजमेंटें तीन साला एग्रीमेंट करती हैं। एग्रीमेंट करने में किसी मैनेजमेंट द्वारा जब-तब की जाने वाली देरी अपने मनमाफिक शर्तें मनवाने के लिये हालात बनाने के वास्ते होती है। इसलिये मैनेजमेंटें आमतौर पर एग्रीमेंट अंग्रेजी में करती हैं ; एग्रीमेंट की प्रतियां मजदूरों को नहीं मिलती ; आधी-परधी एग्रीमेंट बता कर मजदूरों से सहमति ली जाती है।

प्रोडक्शन टारगेट, वर्क लोड, वर्किंग कन्डीशन, वेतन व सहुलियतें, डिसिप्लिन, एग्रीमेंट लागू रहने के दौरान आर्थिक मांग उठाने पर पाबन्दी : यह सब मिल कर एग्रीमेंटों की धुरी बनती हैं। एग्रीमेंटों में छिपी बारीकियों की एक झलक के लिये मार्च 1987 में 1990 तक के लिये हुई एस्कोर्ट्स एग्रीमेंट का एक अन्श प्रस्तुत है :

" 10. बी) यूनियन तथा कामगार यह स्वीकार करते हैं कि वे मैनेजमेंट द्वारा निर्धारित उत्पादन स्तर को मानेंगे तथा बनाये रखेंगे।

सी) यदि कोई कामगार मैनेजमेंट द्वारा निर्धारित उत्पादन स्तर को पूरा नहीं करेंगे या अपने कार्यस्थल से अनुपस्थित रहेंगे/पाये जायेंगे तो उन पर 'काम नहीं, वेतन नहीं' का नियम लागू होगा।

ई) ... यूनियन स्वीकार करती है कि कम्पनी को विभिन्न कार्य प्रणाली एवं तरीकों के लिये टाइम स्टैन्डर्ड बनाने का अधिकार है। कामगार कम्पनी द्वारा निश्चित टाइम स्टैन्डर्ड के अनुसार उत्पादन देंगे। यूनियन ने यह भी माना है कि कम्पनी के द्वारा एक बार निश्चित किये गये टाइम स्टैन्डर्ड्स, किसी प्रणाली में तबदीली, सामान में तबदीली, मशीनरी, टूल, जिग-फिक्सचर या किसी ऐसे काम जो उस प्रणाली पर असर डालते हैं, के कारण बदले जा सकते हैं।

एफ) उत्पादन/उत्पादकता के लिये एक कामगार को एक स्थान/मशीनरी से दूसरे स्थान/मशीन पर स्थानान्तिरित किया जा सकता है। जब कभी भी एक मशीन चालक से दक्षता के अनुसार उसी तरह की एक या अधिक मशीनों को चलवाना मुमकिन हो तो यूनियन उस कामगार को वैसी मशीन/मशीनों पर लगाये जाने पर हस्तक्षेप नहीं करेगी और इसमें बाधा नहीं डालेगी।

11. कामगारों को दिये जाने वाले समस्त वेतन इस शर्त पर निर्भर करते हैं कि वे अनुबन्ध 'ए' के अनुबन्ध-1, जो कि एफीशियन्सी स्कीम है, में दिये गये कम से कम उत्पादन स्तर को प्राप्त करते हैं।..."

ऐसे में पहली जरूरत तो यह बनती है कि किसी भी एग्रीमेंट पर सहमति देने से पहले उसे जाना जाये, उसे परखा जाये। हड़बड़ी में एग्रीमेंटों पर दस्तखत करने का कोई कारण हमें नजर नहीं आता। और फिर, मशीनों से जूझते मजदूर यह बखूबी जानते हैं कि हड़बड़ी में अंग-भंग हो जाते हैं।

एग्रीमेंट की जांच-परख की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार की हो सकती है :

● प्रस्तावित एग्रीमेंट की प्रति हासिल करें। उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि इसके लिये आपको भरसक प्रयत्न करने होंगे। ऐसे प्रयत्नों के प्रति लापरवाही अपने स्वयं के हितों से मुंह मोड़ना है। अकेले-अकेले से बात नहीं बने तो ग्रुपों में यह प्रयास करें।

● स्वयं उसे ध्यान से पढ़ें और प्लान्ट में अपने सहकर्मियों के साथ उस पर गम्भीरता से चर्चा करें।

● अन्य प्लान्टों के वरकरों से विचारों का आदान-प्रदान करें। एस्कोर्ट्स कम्पनी के संकट को देखते हुये – मोटर साइकिल डिवीजन ने 6 करोड़ रुपयों का ओवर ड्राफ्ट बैंकों से लिया हुआ है – एस्कोर्ट्स मजदूरों के लिये यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे सूरजपुर, पटियाला, बंगलोर स्थित एस्कोर्ट्स के वरकरों से भी प्रस्तावित एग्रीमेंट पर विचार-विमर्श करें।

● फरीदाबाद में यह सहुलियत उपलब्ध है कि आप अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से भी सलाह-मशविरा ले सकते हैं, उनके प्रत्यक्ष अनुभव से कुछ हासिल कर सकते हैं। इतना ही नहीं, मैनजमेंट से टकराव तेज होने की स्थिति में अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर साहस और सहायता के प्रमुख स्रोत हैं।

● आपके प्रियजन आपकी सुरक्षा और समृद्धि में निकटता से जुड़े हैं। प्रस्तावित एग्रीमेंट पर उनके साथ बात-चीत एक अनिवार्य आवश्यकता है।

विदूषक : थक कर माथा पकड़ा है या घबरा गये? मित्र, मैं जानता हूँ कि माथा-पच्ची की तुम्हारी कैपेसिटी कम नहीं है। कभी पंजाब केसरी तो कभी नवभारत टाइम्स पकड़े अडवाणी और अर्जुन सिंह की मूँछ और पूँछ पर तुम घन्टों चीर-फाड़ करते हो। खैर, चाय की दुकान पर अपने जीवन से डाइरेक्टली जुड़ी बातों पर चर्चा करोगे तो तुम गौण नहीं रहोगे।

कहां दुनियां का दायरा, कहां कोई फैक्ट्री का वरकर
गर सोचे-समझे, अपनी परेशानी से सटकर
मोटे-मोटे हरफ में लिखा है साफ
फैक्ट्री की संकट कोई अनोखी नहीं है
रूस में, जापान में, हर जगह कहानी यही है
हल अगर निकालना हो, कहीं चल कर, आखिरकार
तो परेशानी को बांट कर, स्थिति नाप-तोल कर
समझ कर, सम्भल कर, एकसाथ मिल कर
फैक्ट्री और दुनियां को अपने हाथों में ले कर
चलना होगा आगे, तभी बनेगी बात
बात यही है, बात है साफ।

मजदूर आन्दोलन की एक झलक (200 पेज, पचास रूपये)

किताब में चर्चित विषय हैं:

फरीदाबाद की फैक्ट्रियों के घटनाक्रम का विस्तृत वर्णन। भारत के औद्योगिक क्षेत्रों के घटनाक्रम का विश्लेषण।
अन्य देशों में मजदूर आन्दोलन की रिपोर्टें। राजनीतिक-सामाजिक विश्लेषण।
यह किताब मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद- 121001 से प्राप्त की जा सकती है।
डाक द्वारा पुस्तक मंगाने के लिये शेर सिंह, सम्पादक फरीदाबाद मजदूर समाचार के नाम 55 रूपये का बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे के ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73